P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का तुलनात्मक अध्ययन

सारांश

शिक्षण व्यवस्था संचालक के रूप में शिक्षक की भूमिका तभी प्रभावशाली बन पाती है जब वह तनाव मुक्त तरीके से अपने कार्यों का सम्पादन करता है। दूसरे शब्दों में शिक्षक के कार्यजनित तनाव का उसके शिक्षण कार्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसका कार्यजनित तनाव उसकी शिक्षण अभिक्षमता को प्रभावित करता है, उसकी निर्णयन प्रवृत्ति प्रभावित होती है अर्थात् शिक्षक पर कार्यजनित तनाव जितना कम होगा उसका कार्य सम्पादन उतना अधिक और बेहतर होगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया गया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव अलग–अलग हैं अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का स्तर भी अलग–अलग है। प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति के जीवन में नींव का वह पत्थर है जिस पर जीवन की सम्पूर्ण प्रक्रियाएं एवं व्यवस्था संचालित अथवा खड़ी की जाती हैं। इसीलिए उनके शिक्षकों को मानसिक रूप से स्वस्थ होकर ऊर्जावान तरीके से सकारात्मक दृष्टिकोंण के साथ अपने शिक्षण कार्य को सम्पादित करना चाहिए।

मुख्य शब्द : कार्यजनित तनाव, प्राथमिक शिक्षा।

पटेल सुशीला देवी
शोध छात्रा,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
सिंघानिया विश्वविद्यालय,
पचेरी बड़ी, झुंझुनू, राजस्थान

प्रमोद कुमार बाजपेयी
विभागाध्यक्ष,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
दयानन्द बछरावाँ पी0जी0 कॉलेज, बछरावाँ,
रायबरेली, उ0प्र0

प्रस्तावना

सा विद्या या विमुक्तये के सिद्धान्त पर संचालित प्राथमिक शिक्षा का उन्नयन एवं विकास शिक्षण व्यवस्था के तीनों स्तम्भों (शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम) पर निर्भर करता है। ऐसा सर्वविदित है कि शिक्षा की उन्नति एवं विकास का श्रेय शिक्षक को दिया जाना चाहिए। जबकि कुछ शिक्षाविद् यह मानते हैं कि व्यवस्था के संचालन एवं व्यवस्थापन में तीनों स्तम्भों की सकारात्मक भूमिका उत्तरदायी होती है। इसमें से किसी की भूमिका कम या ज्यादा कहना उचित नहीं है परन्तु शिक्षक इस व्यवस्था का सबसे उत्तरदायी एवं महत्वपूर्ण स्तम्भ इसलिए है क्योंकि इस व्यवस्था का संचालन उसके द्वारा ही सम्पादित किया जाता है।

शिक्षण व्यवस्था संचालक के रूप में शिक्षक की भूमिका तभी प्रभावशाली बन पाती है जब वह तनाव मुक्त तरीके से अपने कार्यों का सम्पादन करता है। दूसरे शब्दों में शिक्षक के कार्यजनित तनाव का उसके शिक्षण कार्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उसका कार्यजनित तनाव उसकी शिक्षण अभिक्षमता को प्रभावित करता है, उसकी निर्णयन प्रवृत्ति प्रभावित होती है अर्थात् शिक्षक पर कार्यजनित तनाव जितना कम होगा उसका कार्य सम्पादन उतना अधिक और बेहतर होगा और इसके विपरीत भी जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्राथमिक शिक्षा किसी प्राथमिक स्तर पर बालक को दी जाने वाली शिक्षा यदि सकारात्मक है तो उसके परिणाम सकारात्मक होंगे परन्तु यह शिक्षा किसी भी कारण से नैराश्य को बढ़ावा दे रही है तो उसके परिणाम निश्चित रूप से नकारात्मक होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में इसीलिए प्राथमिक शिक्षा का महत्व माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की तुलना में अधिक होता है। क्योंकि यह व्यक्ति के जीवन में नींव का वह पत्थर है जिस पर जीवन की सम्पूर्ण प्रक्रियाएँ एवं व्यवस्था संचालित अथवा खड़ी की जाती है। इसीलिए उसके शिक्षकों को मानसिक रूप से स्वस्थ होकर ऊर्जावान तरीके से सकारात्मक दृष्टिकोंण के साथ अपने शिक्षण कार्य को सम्पादित करना चाहिए।

किसी भी व्यवस्था के उत्थान के लिए व्यवस्था से जुड़े हुए उन कारणों को समझना आवश्यक होता है जो उस व्यवस्था के लिए उत्तरदायी होते हैं। कार्यजनित तनाव ऐसा प्रमुख कारक है जिसके कारण प्राथमिक स्तर की शिक्षा

व्यवस्था प्रभावित होती है। क्योंकि यदि शिक्षक तनाव मुक्त होगा तो उसके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा अधिक प्रभावी एवं सकारात्मक होगी परन्तु यदि शिक्षक तनाव से ग्रसित होगा तो उसके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा अप्रभावी एवं नकारात्मक होगी। क्योंकि उसका कार्यजनित तनाव अनेक रूपों में उसके साथ जुड़ा है वह उसकी कार्यक्षमता को ही कम नहीं करेगा बल्कि शिक्षा के प्रति उसके दृष्टिकोंण को भी प्रभावति करेगा। इसीलिए यह विषय शोध की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

आवश्यकता एवं महत्व

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का तुलनात्मक अध्ययन शोध की दृष्टि से इसलिए आवश्यक है क्योंकि ये दोनों पद एक ही व्यवस्था से जुड़े होने के बाद भी अलग–अलग वेतनमान पर काम करते हुए अपने को एक–दूसरे से अलग मानने लगे हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनका कार्यजनित तनाव भी एक संस्था एवं व्यवस्था से जुड़ने के बाद भी अलग–अलग दृष्टव्य है। यहाँ पर यह जानना महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या शिक्षक एवं शिक्षामित्रों का कार्यजनित तनाव एक ही है अथवा अलग–अलग है यदि अलग–अलग है तो क्यों ? उसके पीछे कौन–कौन से कारण हैं। इन समस्त बिन्दुओं को जानना ही शोध की आवश्यकता है और महत्व भी।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा को अतिमहत्वपूर्ण मानते हुए इसके विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए परन्तु शिक्षकों के शैक्षिक तनाव को कम करने सम्बन्धी किसी विषय पर कोई नियम अथवा व्यवस्था नहीं की गयी इसके विपरीत बिना सुविधाओं के अच्छे परिणाम की सोच से उन पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से दबाव बनाया जा रहा है।

आज प्राथमिक शिक्षा इतनी महत्वपूर्ण है कि उसके विकास अथवा उत्थान के बगैर व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र का उत्थान सम्भव नहीं है। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े शिक्षक व उनके कार्यजनित तनाव की ओर सरकार एवं उनकी संस्थाओं का ध्यान नहीं जा रहा है। हमारे देश में यदि किसी ने थोड़ा ध्यान दिया है तो दिल्ली ऐसा केन्द्रशासित पहला राज्य है जिसने सभी स्तरों के शिक्षकों के कार्यजनित तनाव को कम करने के लिए शिक्षणेत्तर कार्यों से शिक्षकों को दूर रखने की मुहिम चलाई है। जिसके परिणाम काफी सकारात्मक पाए गए। इसलिए यह विषय इतना महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील है कि इसे शोध का औचित्य मानते हुए इस पर कार्य करने की आवश्यकता है जो शोधपत्र के माध्यम से किया गया है।

समस्या कथन

"प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव पर किया गया है जिसमें 100 शिक्षक, 100 शिक्षिका तथा 100 शिक्षामित्रों का चयन सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। यह न्यादर्श रायबरेली जनपद के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव को जानने हेतु किया गया है।

साहित्यावलोकन

कुमार मनोज (2009–10) % "आगरा जनपद के पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के तनाव का उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।"

पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के तनाव का उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

पूर्व माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के तनाव एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति में अत्यन्त निम्न स्तर का ऋणात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् तनाव में वृद्धि के साथ शैक्षिक सम्प्राप्ति घटती है। लेकिन तनाव शैक्षिक सम्प्राप्ति को अत्यन्त निम्न स्तर तक ही प्रभावित करता है।

सिंह, सुरजीत (2010), "हाईस्कूल विद्यार्थियों की सामान्य मानसिक योग्यता का विकास और इसका तनाव, भावुकता एवं सामाजिक परिपक्वता से सम्बन्ध"

इस अध्ययन का उद्देश्य हाईस्कूल विद्यार्थियों की सामान्य मानसिक योग्यता का स्तर ज्ञात करना। विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का उनके तनाव, भावुकता एवं सामाजिक परिपक्वता से सम्बन्ध का अध्ययन करना।

इस अध्ययन में निष्कर्ष रूप में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का स्तर उच्च कोटि का होता है ऐसे विद्यार्थी तनाव भावुकता एवं सामाजिक परिपक्वता से सकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित

होते हैं तथा जिन विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का स्तर निम्नकोटि का होता है। ऐसे विद्यार्थी तनाव भावुकता एवं सामाजिक परिपक्वता से नकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित होते हैं।

गुप्ता, ज्योतिका (2011), "किशोरी छात्राओं के मध्य तनाव तथा तनाव का भावनात्मक बुद्धि मानसिक बुद्धि एवं व्यक्तित्व निर्माण के चरों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन"

इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरी छात्राओं में होने वाले तनाव के विभिन्न स्तरों का अध्ययन करना। किशोरी छात्राओं के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी स्थिरता का अध्ययन करना। किशोरी छात्रों के तनाव तथा तनाव का उनकी भावनात्मक बुद्धि मानसिक बुद्धि एवं व्यक्तित्व निर्माण चरों के सम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन में निष्कर्षतः पाया गया कि किशोर छात्राओं की भावनात्मक बुद्धि, मानसिक बुद्धि एवं व्यक्तित्व निर्माण के चरों को तनाव सभी स्तरों में प्रभावित करता है जैसे शोध अध्ययन में पाया गया कि 6% छात्राएँ अपने को गम्भीर रूप से उदास सिद्ध करती हैं, 12% सामान्य रूप से उदास एवं 27% निम्न रूप से उदास सिद्ध करती हैं। उदासी का सामान्य कारण समाज और अभिभावकों में व्याप्त लिंगभेद की भावना जो अज्ञानता और गरीबी के कारण उपजी है।

सिंह, हीरा (2012), "स्कूली बच्चों में होने वाली परीक्षा का तनाव और इससे प्रभावित उनकी बुद्धि व्यक्तित्व और उपलब्धि गतिविधियों का अध्ययन"

इस अध्ययन का उद्देश्य 400 स्कूली बच्चों के मध्य परीक्षा के तनाव का उनकी बुद्धि, व्यक्तित्व और उपलब्धि गतिविधियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

इस अध्ययन में निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि अधिकांशतः स्कूली बच्चे परीक्षा के समय तनाव का अनुभव करते हैं। महिला तथा पुरूष छात्रों में भिन्न–2 स्तरों पर परीक्षा के तनाव को देखा जा सकता है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले स्कूली बच्चे अधिक तनाव ग्रसित रहते हैं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले स्कूली बच्चो की तुलना में। स्कूल के अच्छी बुद्धि वाले विद्यार्थी कम तनाव अनुभव करते हैं अपेक्षाकृत स्कूल के कम बुद्धि वाले विद्यार्थी की तुलना में। परीक्षाकाल उच्च उपलब्धि गतिविधि वाले स्कूली बच्चे भी परीक्षा के तनाव से प्रभावित होते हैं।

शुक्ला, संध्या (2018),'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन'।

उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी बालकों के शैक्षिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी बालिकाओं के शैक्षिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव के प्रति समान दृष्टिकोंण रखते हैं। वे सभी एक समान परिवेश से उत्पन्न चर हैं अतः दोनों के मध्य अन्तर न होना स्वाभाविक है।

प्राप्त परिणाम एवं निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि रायबरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी तनाव के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् विद्यार्थियों के शैक्षिक तनाव पर उनके शैक्षिक वातावरण, रहन–सहन के स्तर एवं लैगिंक स्तर का सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत् सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें वर्तमान क्रिया की सार्थकता सिद्ध करने या वर्तमान क्रिया में सुधार करने के लिए वर्तमान दशा से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं।

शोध उपकरण

शोधार्थिनी ने अपने शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव का अध्ययन किया है। अपने शोध अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी ने शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मापन के लिए **डॉ0 मीनाक्षी शर्मा** और **सतविन्दर पाल कौर** द्वारा निर्मित **Teachers Occupational stress scale** का प्रयोग किया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन,मानक त्रुटि एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध परिकल्पना परीक्षण

H_{01}

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर (D)	मानकत्रुटि (SE_D)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
महिला एवं पुरूष शिक्षक	200	96.80	15.66	7.10	1.49	4.76	0.05=1.97 सार्थक
शिक्षामित्र	100	89.70	9.97				0.01=2.59 सार्थक

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमान क्रमशः 96.80 तथा 89.70 और मानक विचलन क्रमशः 15.66 तथा 9.97 पाए गए जो उनके मध्य कार्यजनित तनाव के अन्तर को अवलोकित करते है। प्राप्त सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–अनुपात का मान 4.76 प्राप्त हुआ जो कि df = 298 के द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के 0.05 स्तर और 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक सारणीमान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः टी–अनुपात का मान दोनों स्तरों पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् प्रतिदर्शों के मध्यमानों के मध्य अन्तर पाया जाता है।

H_{02}

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर (D)	मानकत्रुटि (SE_D)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
महिला शिक्षक	100	97.10	16.15	7.40	1.89	3.91	0.05=1.97 सार्थक
शिक्षामित्र	100	89.70	9.97				0.01=2.60 सार्थक

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमान क्रमशः 97.10 तथा 89.70 और मानक विचलन क्रमशः 16.15 तथा 9.97 पाए गए जो कि उनके मध्य तनाव के अन्तर को अवलोकित करते हैं। प्राप्त सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–अनुपात का मान 3.91 प्राप्त हुआ जो कि df=198 के द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के 0.05 स्तर और 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक सारणीमान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 से अधिक है। अतः टी–अनुपात का मान दोनों स्तरों पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् प्रतिदशों के मध्यमानों के मध्य अन्तर पाया जाता है।

H_{03}

प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमान का अन्तर (D)	मानकत्रुटि (SE_D)	टी–अनुपात (t)	सार्थकता स्तर
पुरूष शिक्षक	100	96.50	15.15	6.80	1.81	3.97	0.05=1.97 सार्थक
शिक्षामित्र	100	89.70	9.97				0.01=2.60 सार्थक

उपर्युक्त सारणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमान क्रमशः 96.50 तथा 89.70 और मानक विचलन क्रमशः 15.15 तथा 9.97 पाए गए जो उनके मध्य तनाव के अन्तर को अवलोकित करते हैं। प्राप्त सांख्यिकीय विश्लेषण में टी–अनुपात का मान 3.97 प्राप्त हुआ जो कि df=198 के द्विपुच्छीय सार्थकता परीक्षण के 0.05 स्तर और 0.01 स्तर के न्यूनतम सार्थक सारणीमान क्रमशः 1.97 एवं 2.60 मान से अधिक है। अतः टी–अनुपात का मान दोनों स्तरों पर सार्थक है। परिणामतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत होती है अर्थात् प्रतिदर्शों के मध्यमानों के मध्य अन्तर पाया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में शोधार्थिनी ने यह पाया कि शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के मध्यमानों के मध्य अन्तर दृष्टव्य है अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के सैद्धान्तिक व व्यवहारिक पक्ष भिन्न हैं।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में शोधार्थिनी ने यह भी पाया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् महिला शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव अलग–अलग हैं जिसका प्रभाव उनके कार्यों और व्यवहारों में देखा जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष में शोधार्थिनी ने यह भी पाया कि पुरूष शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के

कार्यजनित तनाव भिन्न हैं अर्थात् दोनों के कार्यजनित तनाव उनके कार्य व्यवहार को अलग–अलग तरह से प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव अलग–अलग हैं। उनके मध्य यदि कोई समानता है तो यह सांख्यिकीय गणना, न्यादर्श चुनाव या किसी अन्य विवेचनीय कारण से हो सकती है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ में शोधार्थिनी ने पाया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् शिक्षक एवं शिक्षामित्रों के कार्यजनित तनाव के पीछे उनके वेतन की असमानता है क्योंकि दोनों वर्ग के सहकर्मी लगभग समान जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं परन्तु वेतन की असमानता उनके कार्यजनित तनाव को बढ़ाती है। यदि इस असमानता को दूर किया जाए तो उनके कार्यजनित तनाव को कम किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ में शोधार्थिनी ने यह भी पाया कि शिक्षक की तुलना में शिक्षामित्रों पर कार्यजनित तनाव उनके असुरक्षित भविष्य के कारण बना रहता है जिसका प्रभाव उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा अथवा शिक्षण व्यवस्था पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। यदि शिक्षामित्रों के भविष्य को सरकार द्वारा किसी नीति के तहत सुरक्षित किया जाए तो उनके इस तनाव को कम किया जा सकता है

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्ता, एस0पी0 एवं गुप्ता, अलका (2012) : आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
2. *गुप्ता, एस0पी0 (2013) : अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
3. *कपिल, एच0के0 (2004) : अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा।*
4. *लाल, रमन बिहारी एवं पलोड, सुनीता (2013) : शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
5. *मदान, पूनम (2017) : भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।*
6. *पाण्डा, अनिल कुमार (2018) : अनुसंधान विधियाँ एवं सामाजिक विज्ञानों में सांख्यिकी, साहित्य रत्नालय, कानपुर।*
7. *पाण्डेय, के0पी0 (2005) : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।*
8. *पाठक, पी0डी0 (2016) : शिक्षा के मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*
9. *राय, पारसनाथ एवं राय, सी0पी0 (2011 पुनः मुद्रण) : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।*
10. *सारस्वत, मालती एवं सिंह, मधुरिमा (2013) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।*
11. *सिंह, अरूण कुमार (2006) : उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पटना।*
12. *सिंह, कर्ण (2018) : भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास एवं इसकी चुनौतियाँ, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर खीरी।*
13. *सुलेमान, मोहम्मद (2002) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन दिल्ली।*
14. *शर्मा, आर0ए0 (2005) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन्स, मेरठ।*
15. *उपाध्याय, राधाबल्लभ (2018) : शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।*